शोध-पत्र

प्रेमचंद के उपन्यासों में धर्मनिरपेक्ष समाज की संकल्पना

डॉ. सुनीता खुराना

भारत में धर्मनिरपेक्षता से अभिप्राय "सर्वधर्मसमभाव" से लिया जाता है अर्थात् सब धर्म समान हैं। धर्म के आधार पर किसी भी व्यक्ति अथवा जाति से भेदभाव नहीं किया जा सकता। धर्मनिरपेक्षता की यह धारणा भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की विशेषता रही है। भारत में धार्मिक सहिष्णुता की भावना प्राचीन काल से चली आ रही है। "भारतीय ऋषियों ने दूसरे धर्म का कभी अनादर नहीं किया वे विविध धर्मों को ईश्वर के प्रकाश की विविध धाराओं के रूप में देखते हैं। वे इस बात में विश्वास नहीं करते कि किसी विशेष धर्म का पालन करने से ही मुक्ति मिलेगी। यदि कोई व्यक्ति पूर्ण निष्ठा से ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है तो ईश्वर उस पर अपनी कृपा अवश्य बरसाते हैं।"[1] आधुनिक युग में राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी ने धर्मनिरपेक्षता को अपनाने पर बल दिया।

प्रेमचंद ने 1900 से 1917 तक उर्दू में उपन्यास और कहानियां लिखीं। 'हमखुर्मा' व 'हमसबाब', 'प्रेमा', 'कृष्णा', 'असरारेम आबिद', 'रूठी रानी', 'वरदान', 'जलवा' 'ईसर' आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 1918 ई. से उन्होंने खड़ीबोली में लिखना प्रारंभ किया। 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'प्रतिज्ञा', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' उनके अन्य उपन्यास हैं। मंगलसूत्र उनके असमय कालकवलित होने के कारण अपूर्ण रह गया।

प्रेमचंद एक धर्मनिरपेक्ष लेखक थे। उनकी धर्मनिरपेक्षता की भावना भारतीय धर्मनिरपेक्षता की भावना के अनुरूप है। धर्मनिरपेक्षता की भारतीय अवधारणा "सर्वधर्म समभाव" की है जिसमें सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है, कोई भेदभाव नहीं किया जाता। उन्होंने सर्व धर्मसमभाव अथवा धार्मिक एकता की भावना को अपने उपन्यासों में प्रतिष्ठित किया है। उनकी धर्मनिरपेक्षता का फलक अत्यंत व्यापक है। सर्वधर्म समभाव के साथ-साथ धर्म में व्याप्त आडंबरों, पाखण्डों और अंधविश्वासों का भी वे विरोध करते हैं। विविध धर्मों में व्याप्त कुरीतियों को भी प्रखरता से सामने लाते हैं। वे कहते हैं कि आज धर्म का वास्तविक स्वरूप लुप्त हो गया है, "अब धर्म केवल स्वार्थ-संगठन है।"[2] धर्म के मूलभूत गुण दया, परोपकार, माधुर्य, सत्य, सहिष्णुता आदि लुप्त हो गये हैं। धर्म में बाहरी कर्मकाण्ड को महत्व मिलने लगा है, बाहरी धर्माचरण ने ही धर्म का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में सभी धर्मों के प्रति समान आदर रखते हुए धर्मों में व्याप्त बाह्य आडंबरों का खण्डन किया है। अतः उनके उपन्यासों में धर्मनिरपेक्षता की भावना दो रूपों में मिलती है-सर्वधर्म समभाव के रूप में और धार्मिक बाह्य आडंबरों के खण्डन के रूप में।

प्रेमचंद युग में विभिन्न धर्मावलंबियों में धार्मिक विद्वेष व्याप्त था। उस समय धर्म में विद्यमान विभिन्न कुरीतियों को दूर करने के लिए धर्मनिरपेक्षता की भावना के प्रसार की अत्यंत आवश्यकता थी। हिंदू-मुस्लिम नेता, साहित्य से जुड़े विद्वान और पत्रकार आदि धार्मिक कुरीतियों को दूर करने के लिए प्रयास कर रहे थे। प्रेमचंद युगीन परिवेश के प्रति अत्यंत सजग साहित्यकार थे। युगीन परिस्थितियों से पूर्णतः परिचित रहते थे। उनकी धारणा थी कि स्वराज्य-प्राप्ति के साथ-साथ सर्वधर्म समभाव की और विभिन्न धर्मों में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों को दूर करने की बड़ी आवश्यकता है। जब तक समाज अंधविश्वासों, सांप्रदायिकता में आबद्ध रहेगा तब तक समाज का विकास नहीं हो सकता। उन्होंने

कहा–''हमारा स्वराज्य केवल विदेशी जुए से अपने को मुक्त करना नहीं है बल्कि इस सामाजिक जुए से भी, जो विदेशी शासन से कहीं अधिक घातक है।''[3] प्रेमचंद सभी धर्मों का समान रूप से आदर करते थे। वे मानते थे कि सभी धर्मों का आधार मानवता होनी चाहिए। उनका विचार था कि विभिन्न धर्मों को मानने वाले अपने-अपने धर्मों का पालन करते हुए मानवता को ध्यान में रखें। व्यावहारिक जीवन में यह न देखें कि अमुक व्यक्ति किस धर्म का है। वे स्वयं हिन्दू-मुस्लिम दोनों धर्मों का आदर करते थे। उन्होंने कहा भी है–''मैं एक इंसान हूं और जो इंसानियत रखता हो, इंसान का काम करता हो, मैं वहीं हूं और उन्हीं लोगों को चाहता हूं। मेरे दोस्त अगर हिंदू हैं तो मेरे कम दोस्त मुसलमान भी नहीं है और इन दोनों में मेरे नज़दीक कोई खास फर्क नहीं है, मेरे लिए दोनों बराबर हैं।''[4]

प्रेमचंद के उपन्यासों में प्रारंभ से ही धर्मनिरपेक्षता की भावना के दर्शन होते हैं। 'असरारे मआबिद' में उन्होंने लेखक 'मौलवी मुहम्मद ताहिर' के किस्से का वर्णन किया है। हिंदू युवक और मुस्लिम युवती के प्रेम द्वारा हिंदू-मुस्लिम एकता को दिखाया है। इससे सिद्ध होता है कि हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना शुरू से ही उनके हृदय में विद्यमान थी। 'सेवासदन' उपन्यास में धर्मनिरपेक्षता की भावना के पूर्णरूपेण दर्शन मिलते हैं। इस उपन्यास में तेगअली धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक बनकर आया है। यह पात्र मुस्लिम धर्म और समाज में व्याप्त बुराइयों को सामने रखता है। रुस्तम भाई, पद्मसिंह शर्मा, कुंवर अनिरुद्ध आदि पात्र धर्मनिरपेक्ष हिंदू पात्रों के रूप में धर्मनिरपेक्षता का प्रसार करते हैं। 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में लखनपुर गांव में हिंदू-मुस्लिम किसानों को प्रेम से साथ रहते हुए दिखाया गया है। हिंदू ज़मीदारों के खेतों में मुसलमान कारिन्दे काम करते हैं। लखनपुर के ज़मीदार ज्ञानशंकर और प्रेमशंकर की वकील इरफान अली से दोस्ती है। हिंदू और मुसलमानों में विद्वेष की भावना लेशमात्र को भी नहीं है। शहरों से मौलवी और पंडित आकर मासूम लोगों को भड़काते हैं और धार्मिक विद्वेष की भावना फैलाने लगती है। इस उपन्यास में पात्र प्रेमशंकर के माध्यम से धर्मनिरपेक्ष विचारों को प्रकट किया है। प्रेमशंकर के माध्यम से गांधीजी के धर्मनिरपेक्ष विचारों की अभिव्यक्ति की है। प्रेमशंकर सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। 'कलम का सिपाही' में अमृतराय लिखते हैं–''प्रेमशंकर बरसों देश से बाहर रहने के बाद अपने देश लौटते हैं और अपना प्रेमाश्रम स्थापित करते हैं। अंतर इतना ही है कि गांधी जी अफ्रीका गए थे, प्रेमशंकर अमरीका जाते हैं... जब लौटे तो गांधीजी की प्रतिमूर्ति बनकर-क्योंकि गांधी की मूर्ति इस बीच मुंशी जी के हृदय-आसन पर स्थापित हो चुकी थी।''[5]

रंगभूमि उपन्यास का रचनाकाल रहा 1922-24 के बीच में। इसमें प्रेमचंद ने हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द बनाए रखने का प्रयास किया है। 1921 में खिलाफत आंदोलन और चौरा-चौरी हत्याकाण्ड के परिणामस्वरूप साम्प्रदायिकता की भावना बढ़ गई थी। सांप्रदायिक दंगों के वातावरण में भाईचारा दिखाया है। नायकराम ताहिर अली को अपने घर के सदस्य जैसा मानता है। वह कहता है, ''आप अपने घर ही के आदमी हैं।... आप तो अपने भाई ही ठहरे।''[6] शहर में हिन्दू और ईसाई परस्पर एक-दूसरे के घर आते जाते हैं। इन्दु और सोफिया में गहरी मित्रता है। विनय और सोफिया परस्पर प्रेम करते हैं। सोफिया के भाई प्रभुसेवक का हिन्दू परिवारों में आना-जाना है। भरतसिंह और जानसेवक इकट्ठे व्यापार करते हैं। ईसाइयों और मुस्लिम परिवारों में परस्पर सौहार्द है। रंगभूमि में हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई जाति में कुछ कट्टरता जरूर दिखाई है पर उदार मनोवृत्ति वाले पात्र भी अधिकता में दिखाए हैं। इस उपन्यास में सूरदास सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष पात्र है। उसके सामने सभी पात्र-वे किसी भी धर्म के हों, माथा झुकाते हैं। वह ऐसा दार्शनिक है जो धर्म की उच्चतम व्याख्या करता है। उसे विजय-पराजय, यश-अपयश, लाभ-हानि की परवाह नहीं है। वह तो जीवन के खेल को एक खिलाड़ी की तरह खेलता है। जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण ही उसे धर्मनिरपेक्ष बनाता है। उपन्यास 'कायाकल्प' का रचनाकाल 1924-26 तक का है। देश में सांप्रदायिक दंगे हो रहे थे। अराजकता का माहौल था। एक तरफ पंडे-पुरोहित और दूसरी तरफ मुल्ला मौलवी-समाज में विद्वेष की भावना का प्रसार कर रहे थे। प्रेमचंद यहां स्पष्ट कर देते हैं कि हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़ना नहीं चाहते पर कुछ स्वार्थी तत्व उन्हें आपस में लड़वाते हैं। इस उपन्यास में चक्रधर, यशोदानन्दन, ख्वाजा महमूद, वागीश्वरी देवी के माध्यम से धार्मिक सौहार्द को दिखाते हैं। 'गबन' उपन्यास में शहज़ादी जालपा की घनिष्ठ मित्र है। उसे इस सखी से वार्तालाप करके सुकून मिलता है। हिन्दू-मुस्लिम एक-दूसरे के प्रति

मित्रता का भाव रखते हैं। रमानाथ और जोहरा के प्रेम-प्रसंग द्वारा भी प्रेमचंद धर्मनिरपेक्षता की ओर संकेत करते हैं। वह रमानाथ की सच्चे दिल से सहायता भी करती है। रमानाथ जोहरा की तारीफ में कहता है-"मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूं कि मुझे उस तरफ से प्रकाश मिला जिधर से औरों को अंधकार मिलता है। विष में मुझे सुधा प्राप्त हो गई।"[7]

निष्कर्षतः हम देखते हैं कि प्रेमचंद के उपन्यासों में धर्मनिरपेक्ष समाज की संकल्पना साकार रूप धारण करती है। हमारा देश विविध रंगों, विविध धर्मों का देश है। आज आवश्यकता है विविध धर्मावलंबियों को एक ही मानवधर्म के झंडे के नीचे खड़ा करने की और यह कार्य प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से बखूबी निभाया है। वे सर्वधर्मसमभाव को इतना जरूरी मानते थे कि अंतर्धर्मीय विवाहों को भी उन्होंने मान्यता दी। हां, धार्मिक विद्वेष की स्थितियों में वे उसे संपन्न होते नहीं दिखा सके। उनके द्वारा प्रारंभ की गई धर्मनिरपेक्षता समाज की संकल्पना आज और भी व्यापक होकर विकसित हो रही है।

3683, सेक्टर-23।,
गुडगांव, हरियाणा
ईमेल: sunitadelhi3010@gmail.com

संदर्भ सूची

1. श्रीमद्भगवद्गीता, चतुर्थ अध्याय, 11 श्लोक
2. रंगभूमि : प्रेमचंद, पृष्ठ 78
3. प्रेमचंद : विविध प्रसंग, भाग 2, पृष्ठ 471
4. प्रेमचंद घर में : शिवरानी देवी, पृष्ठ 93
5. कलम का सिपाही : अमृतराय, पृष्ठ 215
6. रंगभूमि : प्रेमचंद, पृष्ठ 68
7. गबन : प्रेमचंद, पृष्ठ 312